सृजनात्मक परीक्षण के प्रकार :-

(Kinds of Creativity Test)

— सृजनात्मक परीक्षण के प्रकार निम्नलिखित हैं :-

(i) शाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण (Verbal Creativity Test):-

शाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण, वे परीक्षण होते हैं जिनमें परीक्षण पदों या प्रश्नों को शब्दों अर्थात् भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है और बालक भी उनके उत्तर भाषा के माध्यम से ही देते हैं। इसका आविष्कार बाकर मेंहदी जी ने किया।

(ii) अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण (Non Verbal Creativity Test):-

अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण होते हैं जिनमें परीक्षण पदों या प्रश्नों अथवा समस्याओं को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया जाता, वरन् इन्हें स्थूल वस्तुओं, चित्रों और पेंसिल आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। बालक इनके उत्तर क्रियाओं के द्वारा देते हैं। इन परीक्षणों को पेपर-पेन्सिल परीक्षण (Paper-Pensil Test) और निष्पादन परीक्षण (Performance Test) भी कहते हैं। इस परीक्षण का आविष्कार बाकर मेंहदी जी ने किया।

(iii) शाब्दिक-अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण :-
(Verbal and Non Verbal Creativity Test)

ये वे शाब्दिक अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण होते हैं जिनमें सृजनात्मकता के कुछ घटकों का मापन शाब्दिक पदों द्वारा किया जाता है तथा कुछ घटकों का मापन अशाब्दिक पदों द्वारा किया जाता है। इसका आविष्कार श्री बी.के. पासी द्वारा किया गया।

टॉरेन्स का सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण भी सृजनात्मक शाब्दिक-अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण का उदाहरण है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता परीक्षणों की उपयोगिता एवं महत्व

(Utility and Importance of Creativity Tests in Education)

विश्व में ईश्वरीय एवं प्राकृतिक सृजन के अतिरिक्त जो कुछ भी मानवीय सृजन हुआ है या होरहा है वह सब सृजनशील व्यक्तियों के द्वारा ही हुआ है और हो रहा है। यही कारण है कि अब प्रारम्भ से ही सृजनशील बच्चों की पहचान कर उनकी सृजनात्मक के विकास के लिए प्रयास करने पर बल दिया जाता है। उस स्थिति में और अधिक एवं उपयोगी सृजन हो सकेगा। इस क्षेत्र में हमारी सबसे अधिक सृजनात्मकता परीक्षण ही करते हैं, उनके द्वारा निम्नलिखित बातों का पता चलता है:-

(i) सर्वप्रथम बालकों की सृजनात्मकता शक्ति का पता लगाया जाता है।

(ii) उसके बाद बालकों की सृजनात्मकता क्षेत्र:- कला, साहित्य, विज्ञान, तकनीकी, कृषि, प्रौद्योगिकी आदि का पता लगाया जाता है।

(iii) इसके बाद उन्हें तदनुसार शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन दिया जाता है।

(iv) इसके साथ ही बालकों की सृजनशीलता बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है।

बालकों में सृजनात्मकता बढ़ाने के उपाय:-

(Techniques of Fostering creativity of Children)

बालकों में सृजनात्मकता तो जन्मजात होती है परन्तु इसका विकास उचित मात्रा में तभी होती है जब उन्हें इसके विकास के लिए उचित पर्यावरण मिलता है। सृजनात्मकता के सन्दर्भ में दूसरा तथ्य यह है कि भिन्न-भिन्न बालकों में भिन्न-भिन्न प्रकार की सृजनात्मकता होती है।

Scanned with CamScanner

बालकों की सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए परिवार (Family) और विद्यालयों (schools) को निम्नलिखित कार्य करने चाहिए :-

1. सृजनात्मकता का सम्बन्ध अहं से होता है। अतः परिवार एवं विद्यालय दोनों को ही बालकों को अहं तुष्टि का अवसर देना चाहिए।
2. बालकों के चारों ओर का वातावरण उन्हें कुछ नया कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए।
3. बालकों को ऐसे केन्द्रों का निरीक्षण कराया जाना चाहिए जहाँ सृजनात्मक कार्य हो रहे हैं।
4. बालकों में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का विकास करना चाहिए।
5. बालकों को सृजनात्मकता सम्बन्धी किसी भी प्रकार की अनुक्रिया करने के स्वतन्त्र अवसर देने चाहिए।
6. बालकों के मौलिक विचारों एवं कार्यों के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
7. बालकों के मन में किसी प्रकार का संकोच एवं भ्रमन हो, इसके लिए प्रयास करना चाहिए।
8. बालकों को तनाव, दुश्चिन्ता एवं भग्नाशा आदि मानसिक विकारों से बचना चाहिए उसी स्थिति में वे आत्मविश्वास के साथ सृजनशील कार्य कर सकते हैं।
9. विद्यालयों में पाठ्यचर्या क्रियाओं के साथ-साथ सांस्कृतिक पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए एवं छात्रों को अपनी सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति के स्वतन्त्र अवसर देने चाहिए।
10. वर्तमान में बालकों की सृजनात्मकता के विकास की कुछ नवीन तकनीकें विकसित हुई हैं; जैसे— ब्रेन तकनीकी एवं ब्रेन स्टॉरमिंग तकनीकी। परिवार में अभिभावकों और विद्यालयों में शिक्षकों को इन तकनीकियों का प्रयोग करना चाहिए।
11. यह भी आवश्यक है कि अभिभावक एवं शिक्षक बालकों की अपनी सृजनात्मकता के विकास के लिए आवश्यक सामग्री सुलभ कराएँ।

P.T.O.

Scanned with CamScanner